डिजिटल सामंतों से सावधान
(आर्थिक संदर्भ में)
(एक स्वतंत्र विचार)

लेखक
डॉ. कैलाश सोडाणी
पूर्व कुलपति
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा

सार (Abstract):— कुछ समय के लिए तकनीकी विकास के बल पर अचूक मात्रा में उत्पादन कर के दुनियाँ भर में माल बेचकर भरपूर मुनाफा कमाने वाली मल्टीनेशनल कम्पनियों का दौर चला। आर्थिक दृष्टि से पराक्रमी होने के बावजूद भी प्रजातांत्रिक सरकारों पर हुकुमत नहीं कर पायी। वैसे यह इनका एजेण्डा भी नहीं था।
विज्ञान के आशीर्वाद से संचार जगत में होने वाले निरन्तर परिवर्तनों से दुनियाँ डिजिटल वर्ल्ड में परिवर्तित हो रही है। डिजिटल वर्ल्ड की बागडोर सम्भालने की महत्वाकांक्षा माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक, एप्पल, अमेजन जैसे औद्योगिक घरानों के मालिकों में बढ़ रही है। खतरा यह है कि कहीं राजनेताओं की सुस्ती दुनियाँ को नये डिजिटल सामंतो के इशारे पर चलने के लिए विवश नहीं कर देगी? विदेशी डिजिटल व्यापारिक इकाइयों को नियंत्रण में रखने के लिए बिना देरी किये आवश्यक कायदे–कानून बना कर लागू करने होंगे। साथ ही आमजन अर्थात् उपभोक्ताओं को भी समझना होगा कि मुफ्त सेवाओं के प्रलोभन में बड़े संघर्ष के बाद प्राप्त इस आजादी को खोने की जोखिम नहीं उठाना है।

प्रमुख शब्द : - कोविड–19, विज्ञान, आर्थिक, ऑनलाइन

सैकड़ों वर्षो का इतिहास साक्षी है कि समय के साथ समाज के नैतृत्व में होने वाले परिवर्तन का कारण केवल तलवारे, गोला–बारूद, एटम बम्ब ही नहीं रहे है अपितु तकनीकी सोच एवं ज्ञान भी रहा है। तकनीकी विकास से चीजें बहुत बदल गयी है। आज दुनियाँ के विभिन्न देशों में मध्य वर्चस्व की लड़ाई युद्ध के मैदान में नहीं अपितु प्रयोगशालाओं में लड़ी जा रही है। लगभग दो सौ वर्ष पूर्व तकनीकी विकास से कल कारखानों का जन्म हुआ। बिना किसी लड़ाई झगड़े के हजारों मजदूर एवं धन–सम्पदा के बल पर उद्योगपति समाज में अग्रणी भूमिका में आ गये।

वक्त ने फिर करवट ली। राजनैतिक संघर्ष के साथ–साथ यातायात और संचार में हुए क्रान्तिकारी परिवर्तनों से प्रजातान्त्रिक सरकारों के राजनेता राष्ट्रों के मुखिया की भूमिका में आ गये। जागीरदारों की जगह समाज के नये सामन्त बन गये।

कुछ समय के लिए तकनीकी विकास के बल पर अचूक मात्रा में उत्पादन कर के दुनियाँ भर में माल बेचकर भरपूर मुनाफा कमाने वाली मल्टीनेशनल कम्पनियों का दौर चला। आर्थिक दृष्टि से पराक्रमी होने के बावजूद भी प्रजातांत्रिक सरकारों पर हुकुमत नहीं कर पायी। वैसे यह इनका एजेण्डा भी नहीं था।

विज्ञान के आशीर्वाद से संचार जगत में होने वाले निरन्तर परिवर्तनों से दुनियाँ डिजिटल वर्ल्ड में परिवर्तित हो रही है। डिजिटल वर्ल्ड की बागडोर सम्भालने की महत्वाकांक्षा माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक, एप्पल, अमेजन जैसे औद्योगिक घरानों के मालिकों में बढ़ रही है। खतरा यह है कि कहीं राजनेताओं की सुस्ती दुनियाँ को नये डिजिटल सामंतो के इशारे पर चलने के लिए विवश नहीं कर देगी?

आप क्या पढ़ रहे है, क्या लिख रहे है, क्या देख रहे है, क्या खा रहे है, कहाँ जा रहे है, क्या चर्चा कर रहे है अपितु आपका दिमाग क्या सोच रहा है ? ये सभी जानकारियाँ तो इन डिजिटल मठाधीशों के पास पहुँच रही है। अभी तक तो आपकी गतिविधियों का संकलन मात्र ही हो रहा है। कुछ समय बाद जब आप इनके द्वारा प्रदत्त निःशुल्क सुविधाओं पर पूर्ण आश्रित हो जायेंगे, तब ये नये सामन्त ही तय करेंगे कि आप क्या पढ़ेंगे, लिखेंगे, खायेंगे, पहनेंगे। इन्होने अपने विशाल एवं मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर के बल पर सूचना औद्योगिकी के महाप्रसाद को एक षड़यंत्र के तहत फ्री में बांटकर हम सभी को आश्रित एवं पराजीवी बना दिया है। इनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं में मामूली कटौती भी कल असहनीय हो जायेगी।

ऑनलाइन शिक्षा, वर्क फ्रॉम होम, ऑनलाइन खरीदारी, बैंकिंग, ई–मेल, सोशल विचार विमर्श अर्थात् धीरे–धीरे हमारी जीवन पद्धति पर ही इन सामन्तों का कब्जा होता जा रहा है। स्कूल, कॉलेज, कार्यालय, बाजार, बैंक कब खुलेंगे और कब बन्द होंगे, कितना कामकाज होगा सब कुछ प्रजातांत्रिक सरकारें नहीं, ये नये सामन्त तय करेंगे। इंसान को कठतुतली बना देंगे। सरकारे गौण हो जायेंगी। अभी हॉल ही में हमने भारत सरकार और ट्विटर का वाद–विवाद देखा है। ट्विटर किस आक्रामता से भारत गणराज्य से संवाद कर रहा है। अब इन्सट्राग्राम भी तनातनी के लिए आगे आ रहा है। एक भय ओर भी है कि जिन सामन्तों के पास सूचना का हथियार है वो प्रजातांत्रिक सरकारों के खिलाफ आम राय बनाने की क्षमता भी रखती है।

केन्द्रीय मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद ने ठीक कहा है इन्टरनेट मीडिया कम्पनियों को भारतीय संविधान और यहाँ के कानूनों को मानना ही होगा। इन व्यापारिक कम्पनियों को अभिव्यक्ति की आजादी और प्रजातंत्र पर भारत को ज्ञान देने की जरूरत नहीं है।

इन डिजिटल सामन्तों के आकार के बारे में थोड़ी सी जानकारी रखनी चाहिये। वो इस प्रकार है :–

वर्ष 2020

क्र. सं.	कम्पनी	स्थापना	कर्मचारियों की संख्या	टर्न ऑवर (करोड़ रू.)
1	माइक्रोसॉफ्ट	1975	1,63,000	10,44,000
2	अमेजन	1994	12,98,000	28,18,000
3	गूगल	1998	1,40,000	13,32,000
4	फेसबुक	2004	61,000	6,28,000

सौभाग्य से हालात अभी नियंत्रण में है। वैसे इन इंटरनेट मीडिया कम्पनियों के बेलगाम होने का महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि कोई भारतीय कम्पनी चुनौति देने की स्थिति में ही नहीं है। चीन में फेसबुक, ट्विटर, गूगल, वाट्सएप के विकल्प बना लिए है और उसने इन सभी अमेरिकी मठाधीशों को प्रतिबन्धित कर दिया है। हो सकता है भारत को चीन के रास्ते पर नहीं जाना हो, लेकिन विदेशी सामंतों को भगाने के लिये हमारी भारतीय कम्पनियों को भी ऐसी तकनीकी ऊर्जा तो हासिल करनी ही पड़ेगी तथा प्रजातांत्रिक सरकारों को इन विदेशी डिजिटल व्यापारिक इकाइयों को नियंत्रण में रखने के लिए बिना देरी किये आवश्यक कायदे–कानून बना कर लागू करने होंगे। साथ ही आमजन अर्थात् उपभोक्ताओं को भी समझना होगा कि मुफ्त सेवाओं के प्रलोभन में बड़े संघर्ष के बाद प्राप्त इस आजादी को खोने की जोखिम नहीं उठाना है। इन सामंतों के वास्तविक चरित्र को समझना होगा। ध्यान रहे, जनता द्वारा चुनी हुई सरकार ही जनता के हितों की रक्षा करेंगी, अन्य कोई नहीं।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

यह शोध नहीं है । केवल ऐक साक्षातकार है ।

----------00--------